THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष तथा ई-अधिगम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० नरेश कुमार
सहायक आचार्य
शिक्षा विभाग
हरियाणा कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, ऐलनाबाद, सिरसा, हरियाणा |

सारांश - ***अधिगम मनोविज्ञान के प्रमुख प्रत्ययों में से एक है जो शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अधिगम एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो बालक के व्यक्तित्व के विकास में विशेष भूमिका निभाता है। अधिगम बालक का स्वभाव है जो बालक को समाज सम्मत बनाने के लिए आवश्यक है अधिगम व्यवहार को परिष्कृत करता है। अधिगम मानवीय व्यवहार सम्बंधी एक आधारभूत संप्रत्यय है। अधिगम का साधारण अर्थ है 'सीखना' जिसके परिणाम स्वरुप बालक के व्यवहार में परिवर्तन होता है - ऐसा परिवर्तन जो प्रयत्न से घटित होता है तथा अपेक्षाकृत स्थायी होता है, माता-पिता तथा शिक्षकों का यह परम उद्देश्य होता है कि वे बालक का समुचित विकास करें तथा बालक के व्यवहार में ऐसा परिवर्तन लाया जाए जो शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के साथ-साथ बालक को समाज में उपयुक्त समायोजन करने में समर्थ बना सके।***

प्रस्तावना- शिक्षा को अधिगम का सबसे बड़ा क्षेत्र माना गया है प्रत्येक वस्तु को बालक आसानी से नहीं सीख पाते बालक जन्म के तुरंत बाद ही अधिगम करना आरम्भ कर देते हैं इसलिए उनका विकास धीरे-धीरे होता है। अधिगम के द्वारा जो अनुभव बनते हैं वे एक बालक को भविष्य की समस्याओं के समाधान में सहायता करते हैं इसलिए अधिगम का जीवन में बहुत अधिक महत्व है बालक के अधिगम का दौर सार्वभौमिक तथा इसका आधार निरंतरता है, जरुरत इस बात की है कि बालक जो भी अधिगम करें वह कल्याणकारी हो जिससे बालक का भी कल्याण और इसके साथ-साथ जगत का भी कल्याण हो, अधिगम की यही सार्थकता है, अधिगम बालक के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, अधिगम के द्वारा बालक नई-नई आदतें अपनाता है इससे बालक रिवाजों, प्रथाओं और रुढियों का अनुसरण करता है, बौद्धिक कौशलों का विकास भी अधिगम के द्वारा ही होता है, सही या गलत का निर्णय न्याय व सौन्दर्य की अवधारणा अधिगम के द्वारा विकसित होती है किन्तु अधिगम के कौशल बालक में तभी विकसित होते है जब वे शारीरिक और मानसिक रुप से परिपक्व होते हैं। आजकल चाहे प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष अधिगम हो या ई-अधिगम दोनों में ही तकनीकी का प्रयोग किया जा रहा है, विद्यालयों में भी अध्यापकों को पढ़ाने के लिए कई प्रकार के दस्तावेज, पाठ्यक्रम नोट्स तैयार करने पड़ते हैं जिससे विद्यार्थियों को समझने में आसानी होती है, दोनों ही प्रकार के अधिगम शिक्षा पद्धतियों में तकनीकी की भागीदारी है, इस वजह से विद्यार्थी ई-अधिगम में काफी रुचि भी दिखाने लग गए हैं, ऐसी ही रुचि विद्यार्थी प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष अधिगम में भी दिखाते हैं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि का विकास होता रहता है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष अधिगम: शिक्षा के क्षेत्र में भारत देश प्रारम्भ से ही प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष अधिगम प्रणाली को अपनाता आया है, प्राचीन समय में गुरुकुलों में विद्यार्थी गुरु के सानिध्य में रहकर ही संपूर्ण शिक्षा प्राप्त करते थे, वस्तुतः शिक्षा प्रदान करने के परंपरागत रुप को ही प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष अधिगम कहा जाता है। प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष अधिगम में छात्र अध्यापक से अपने विचार सीधे सांझा कर सकते हैं, और अध्यापक के साथ अपने स्वयं के प्रश्न को भी स्पष्ट कर सकते हैं, प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष अधिगम में अध्यापक छात्रों की स्थिति के अनुसार अपनी शिक्षण शैली में परिवर्तन कर सकता है इससे अध्यापक को स्पष्ट हो जाता है कि जो छात्रों को सिखाया जा रहा है उसका अधिगम छात्र कर रहे हैं या उन्हें और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, जिससे छात्र भी उसी समय किसी विषय में आगे बढ़ने से पहले अपनी सन्देह को स्पष्ट कर सकते हैं, प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष अधिगम औपचारिक शिक्षा प्रणाली पर आधारित प्रक्रिया का अनुसरण करता है जो लक्ष्य सहयोगात्मक होने के साथ-साथ ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग विश्लेषण और मूल्यांकन की योग्यताओं को विकसित करता है।

ई-अधिगम: आधुनिक समय में हमारे चारों ओर सूचना व सम्प्रेषण तकनीकी ने ऐसा जाल फैलाया है जिसने संसार के प्रत्येक व्यक्ति को किसी ना किसी रुप में अवश्य प्रभावित किया है, यदि हम शिक्षा में अधिगम के क्षेत्र की बात करें तो वह भी इससे अछूता नहीं है, आज के समय में शिक्षा प्रणाली कक्षा-कक्ष शिक्षण से हटकर छात्र केन्द्रित हो गई है, ई-अधिगम के बारे में आधुनिक अवधारणा: ई-अधिगम का जो नवीनतम रुप हमें दिखाई दे रहा है उसके संदर्भ में हम ई-अधिगम को ऐसी लर्निंग या अधिगम की संज्ञा दे सकते हैं जिसे विकसित मल्टीमीडिया एवं मोबाइल उपकरणों तथा इंटरनेट एवं वेब तकनीकी दोनों प्रकार की सुविधाओं द्वारा कम्प्यूटर, लेपटोप एवं मोबाइल उपकरणों के माध्यम से अधिगमकर्ताओं को भलीभांति सुलभ कराया जा रहा है। बदलती परिस्थितियों ने इसे मुख्य शिक्षा की ओर अग्रसर किया है। वर्तमान में पारम्परिक कक्षाओं की अपेक्षा आभासी कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है, कहा जा सकता है कि बालक की उन्नति विकास और उद्भव की आधारभूत प्रक्रिया अधिगम है और ई- अधिगम वह प्रक्रिया है जिसमें सूचना और संचार तकनीकी का प्रयोग करके अधिगम को सुगम और सरल बनाया जा सकता है इसके लिए अध्यापक और विद्यार्थी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साधनों का प्रयोग करतें हैं अधिगम प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए यह एक प्रौद्योगिकी युक्त साधन है। ई-अधिगम आधुनिक शिक्षा का एक नया रुप है जिसमे इंटरनेट तकनीकी का उपयोग होता है। यह अध्यापक और छात्रों के लिए अधिगम युक्त वातावरण प्रदान करता है। सूचना और संचार तकनीकी के प्रयोग से अधिगम को सरल बनाना तथा इसे विस्तार देना ही ई-अधिगम के नाम से जाना जाता है।

शैक्षिक उपलब्धि: शिक्षा का उद्देश्य बालकों की अन्तर्निहित शक्तियों का अधिकतम विकास करना और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का आयोजन किया जाता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

दौरान छात्र ने किस सीमा तक अपनी शक्तियों और योग्यताओं का विकास किया है। यह उसकी शैक्षिक उपलब्धि का सूचक है। अन्य शब्दों में शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्रायः छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, कौशल और योग्यता की मात्रा से है शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों की सभी उपलब्धियों को प्रभावित करती है तथा स्वयं भी अन्य गतिविधियों और उपलब्धियों से प्रभावित होती है। शैक्षिक उपलब्धि का महत्व प्रत्येक अधिगम कार्य में बहुत उपयोगी है, इससे छात्रों की बौद्धिक स्तर की प्रगति का पता चलता है।

शोध का उद्देश्य- हरियाणा के सिरसा जिले राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष तथा ई-अधिगम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध की परिकल्पना- हरियाणा के सिरसा जिले के माध्यमिक स्तर पर प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष एवं ई-अधिगम में अध्ययनरत राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध का परिसीमन- शोध समस्या का एक निश्चित क्षेत्र होता है। क्षेत्र से तात्पर्य है, सम्बन्धित अनुसंधान, उपभोक्ता व अन्य सहयोगियों का होना। समस्या का चयन एवं निर्धारण करने के लिए शोधकर्ता को सर्वप्रथम एक क्षेत्र का निश्चय करना चाहिए। प्रस्तुत शोध हरियाणा के सिरसा जिले के राजकीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर कक्षा नौवीं में प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष व ई-अधिगम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित है।

शोध में प्रयुक्त जनसंख्या: प्रस्तुत अध्ययन हेतु जनसंख्या के रुप में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी के अन्तर्गत आने वाले सिरसा जिले के राजकीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले कक्षा नौवीं के सभी छात्र एवं छात्राएं हैं जो प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष एवं ई-अधिगम के माध्यम से अध्ययनरत हैं।

शोध में प्रयुक्त विधि: शोध अध्ययन की सफलता हेतु अपनाई अध्ययन विधि का अत्यधिक महत्व होता है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए "सर्वेक्षण विधि" का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि के द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष तथा ई-अधिगम प्रणाली के द्वारा उनकी शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध के चर:

स्वतन्त्र चर - प्रत्यक्ष कक्षा कक्ष तथा ई-अधिगम

आश्रित चर - शैक्षिक उपलब्धि।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श एवं चयन की विधि: प्रस्तुत शोध अध्ययन में हरियाणा में सिरसा जिले के 121 राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में से (20) माध्यमिक विद्यालयों के 250 विद्यार्थियों का स्तरीकृत

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

यादृच्छिक विधि से न्यादर्श के रुप में चयन किया गया है जो प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष व ई-अधिगम के माध्यम से अध्ययनरत है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण: विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु कक्षा 8वीं की वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों को आधार बनाया गया है, जिसमें 8वीं कक्षा की वार्षिक परिणाम में प्राप्त प्रतिशत अंकों का विवरण लिया गया हैं।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या -

परिकल्पना- हरियाणा के सिरसा जिले के माध्यमिक स्तर पर प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष एवं ई-अधिगम में अध्ययनरत राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी हरियाणा के सिरसा जिले के माध्यमिक स्तर पर प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष एवं ई-अधिगम में अध्ययनरत राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान एवं मानक विचलन व टी-मूल्य का विवरण

क्र.सं.	चर (समूह)	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
1	माध्यमिक स्तर पर प्रत्यक्ष कक्षाकक्ष - में अध्ययनरत राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	125	80.42	7.12	12.29	0.01 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर है।
2	माध्यमिक स्तर पर ईगम में अधि- अध्ययनरत राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	125	70.14	6.07		

स्वतंत्रता अंश 248 के लिए 0.01 का मान = 2.59
'स्वतंत्रता अंश 248 के लिए 0.05 का मान = 1.97

व्याख्या एवं विश्लेषण - सारणी से पता चलता है कि हरियाणा के सिरसा जिले के माध्यमिक स्तर पर प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष एवं ई-अधिगम में अध्ययनरत राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान एवं मानक विचलन के मान क्रमषः 80.42 व 7.12 तथा 70.14 व 6.07 है तथा आंकड़ों की गणना से प्राप्त टी-मूल्य का मान 12.29 है जो कि 0.01 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर दिये गये सारणी मान से अधिक है। अतः हरियाणा के सिरसा जिले के माध्यमिक स्तर पर प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष एवं ई-अधिगम में अध्ययनरत राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया जाता है। इसलिए परिकल्पना को निरस्त किया जाता है क्योंकि हरियाणा के सिरसा जिले के माध्यमिक स्तर पर प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष में अध्ययनरत राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– 2 October -December: 2024

माध्यमिक स्तर पर ई-अधिगम में अध्ययनरत राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान से अधिक है।

शोध का निष्कर्ष- निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हरियाणा के सिरसा जिले के माध्यमिक स्तर पर प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष में अध्ययनरत राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि माध्यमिक स्तर पर ई-अधिगम में अध्ययनरत राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से बेहतर है।

शैक्षिक निहितार्थ: विद्यालय में होने वाली अधिगम क्रियाओं में प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष का अपना ही महत्व होता है। माध्यमिक स्तर पर राजकीय विद्यालयों में ई-अधिगम की अपेक्षा प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष अधिगम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक बेहतर पाई गयी इसलिए विद्यार्थियों को अधिक से अधिक विद्यालयों में प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष शिक्षण के माध्यम से अधिगम कराना चाहिए क्योंकि एक विद्यालय में प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष में अध्यापक विद्यार्थियों की रुचि अधिगम में अधिक समय तक बनाए रख सकता है जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को अच्छी तरह से विकसित किया जा सकता है जिससे छात्रों की रुचि अधिगम लगातार अधिक समय तक बनी रहती है इस कारण वे किसी भी विषय का ज्ञान अच्छी प्रकार से कर सकते हैं। इसके विपरीत ई-अधिगम में अध्यनरत राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की रुचि अधिगम में अधिक समय तक बनाएं रखने में काफी कठिन होता है क्योंकि उनको अधिगम से सम्बंधित समस्या आने पर उसका उसी समय अच्छी तरह से समाधान करना अध्यापक के लिए काफी कठिन होता है। इसलिए थोड़े समय के बाद विद्यार्थी सीखने में अपने आपको असमर्थ पाता है जिसके कारण वे किसी विषय का अधिगम करने में असुविधा को महसूस करते हैं इसलिए विद्यालयों में प्रत्यक्ष कक्षा-कक्ष में नियमित रुप से उपस्थित रहना सीखने के लिए बहुत ही लाभदायक रहता है। विद्यालय की कक्षाओं में शिक्षक विषय ज्ञान के साथ-साथ अन्य सहायक गतिविधियों का आयोजन भी करवा सकता है जो एक विद्यार्थी की सीखने की प्रक्रिया के लिए बहुत ही उपयोगी होता है।

संदर्भ

1. कपिल, एच.के. (2012), अनुसंधान विधियाँ (व्यवहारपरक विज्ञानों में), एच.पी. भार्गव हाउस, आगरा।
2. मोहन, आर. (2010), रिसर्च मैथड इन एजुकेशन, नीलकमल पब्लिकेशन्स प्रा.लि., हैदराबाद।
3. शर्मा, सुरेन्द्र (2007), रिसर्च मैथेडोलोजी: शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
4. त्रिपाठी, आर.एस. (2008), सोशल रिसर्च एण्ड स्टेटिस्टीकल रीजनिंग, विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी।
5. कुशवाह, पुष्पलता एवं सक्सेना, कनक (2006), अनुसंधान के मूलभूत तत्व, आस्था प्रकाशन, जयपुर।